Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2022 3(2), 996–1003

हरियाणा के युवाओं के अवैध अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कैथल जिले के पुंडरी ब्लॉक के विशेष संदर्भ में)

अनिल शोधार्थी[1], जोगिंदर[2], नवीन मलिक[3]

[1] समाजशास्त्र विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविधालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
[2]सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, रायपुरानी, पंचकुला (हरियाणा)
[3] सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, राजकीय महिला महाविद्यालय,सेक्टर -14, पंचकुला (हरियाणा)

Corresponding Author
अनिल,

anilbidhan64@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.3763

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

प्रवास सदियों से चली आ रही एक सार्वभौमिक घटना हैं। जिसे मानव अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जैसे रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा आदि सुविधाओं के लिये प्रवास करता रहा है, लेकिन आज प्रवास की प्रकृति बदल गई है। आज मानव अवैध तरीके से प्रवास करने लगा हैं। भारत में अवैध उत्प्रवास का चलन सबसे ज्यादा पंजाब राज्य में रहा है। जो साथ लगते राज्य हरियाणा में भी पूरी तरह से अपने पैर पसार चुका है। अध्ययन से पता चला है हरियाणा मे सबसे ज्यादा उत्तरी हरियाणा के चार जिलों जिनमें अंबाला, कैथल, कुरुक्षेत्र और करनाल में सबसे ज्यादा युवाओं ने अवैध तरीके से प्रवास किया है। जो ट्रेवल एजेंटों के माध्यम से सयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप के कुछ देशों में चले गए है। उत्तरी हरियाणा में भी यह एक जटिल समस्या बन गई हैं। हमारे शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अवैध उत्प्रवास के कारणों और प्रभावों को जानना है। इस अध्ययन में मेने हरियाणा के कैथल जिले के पूडरी ब्लॉक को अध्ययन क्षेत्र मान कर सुविधाजनक निदर्शन (Convenient sampling) व अवलोकन विधि के माध्यम से ग्रामीण व शहरी दोनों प्रकार के उन परिवारों के व्यक्तियों को उत्तरदाताओं के रूप में चयन किया, जिनके घर से लोगों का संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में अवैध उत्प्रवास हुआ है। व इसके अतिरिक्त उत्प्रवासियों से भी सूचना प्रोद्यौगिकी के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई। और प्राथमिक डेटा के आधार पर इस अध्ययन से पता चलता है कि अवैध अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि, नौकरी की सुविधा न होना, कम वेतन, कम आय, सूखा, कम चिकित्सा एवं शैक्षणिक सुविधाएं शामिल हैं। इसके साथ - साथ अवैध उत्प्रवास के मूल कारणों को भी पता लगाया गया है। जिससे संस्थागत रूप से कुछ ठोस नीतियों का निर्माण हो सके। ऐसी अपेक्षा है कि इस अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष व सुझाव भी उभर कर सामने आएंगे जो इस समस्या का आधारभूत हल प्रदान कर सकने में सहायक होंगे।.

Keywords: अवैध उत्प्रवास, प्रवास, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन, रोजगार, आकर्षक-प्रत्याकर्षक

1. INTRODUCTION

प्रवास जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं। जो आदिम समाज से लेकर सभ्य समाज तक चली आ रहीं हैं। मानव पहले भी भोजन की तलाश मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसता रहा है। जिससे वह अपनी जरूरतों की पूर्ति करता रहा है। प्रवास का मुख्य कारण रोजगार के अवसर, अच्छी तकनीकी शिक्षा, उच्च स्वास्थ्य सेवाए और उन्नत जीवन की लालसा रही है। इस तरह, जनसंख्या के प्रवास का इतिहास अत्यन्त प्राचीन एवं विश्वव्यापी रहा है। और प्रवास थोड़े समय के लिए घूमने व व्यापारिक उद्देश्य के लिए जाने को नहीं कहा जाता है। पहले प्रवास की प्रक्रिया एक गॉव से दूसरे गॉव या एक गॉव से शहर तक होती थी। लेकिन इसी तरह धीरे-धीरे मानव ने लम्बे समय तक एक राज्य से दूसरे राज्य में रोजगार, शिक्षा, आदि के कारण जाने लगा जिसे आंतरिक प्रवास की संज्ञा दी गई। समय के साथ मानव की जरूरते बढ़ती चली गई और इन्ही आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए

मानव एक देश से दूसरे देश में लम्बे समय के लिए जाने लगें जिसे अंतरराष्ट्रीय प्रवास कहा गया है। इस तरह, विभिन्न देशों का इतिहास प्रवास की घटनाओं से भरा पड़ा है।

आज के दौर में प्रवास का रूप बदलकर अवैध प्रवास का रूप धारण कर रहा है। जो सभी देशों के लिए खतरा बन रहा हैं। भारत से अवैध प्रवास की ज्यादातर शुरुआत भारत के पंजाब राज्य से मानी जाती है। और पंजाब के लगते राज्य हरियाणा में भी इसका परिणाम देखा जा रहा है, अवैध उत्प्रवास का ज्यादातर प्रभाव उतरी हरियाणा के जिले जिसमें अंबाला, कैथल, कुरुक्षेत्र और करनाल हैं। इन जिलों के युवा लगभग लाखों की संख्या में डॉकी फ्लाइट से सयुक्त राज्य अमेरिका एवं यूरोप के कुछ देशों में अपनी कृषि योग्य जमीने बेचकर व साहूकारों और बैंकों से ऋर्ण लेकर जा रहे हैं। ये अवैध तरीके से जाने वाले युवा जिन ट्रेवल एजेंटों से मिलते है ये कोई भी ट्रेवल एजेंट सरकार द्वारा मान्यता नहीं हैं।

ये ट्रेवल एजेंट युवाओं से 45-50 लाख रूपये लेकर टूरिस्ट वीजा दिला कर अगले देशो के एजेंटों के माध्यम से अपने-अपने रास्तो से मुख्यत: दिल्ली से दुबई, क्यूबा, इस्तांबुल, पनामा सिटी , EL साल्वाडोर तक वीजा टिकट के द्वारा फ्लाइट से जाते हैं| इसके बाद EL साल्वाडोर से माफियाओं (मानव-तस्करी) द्वारा मैक्सिको के रास्ते से बस, समुन्द्री नाव और गाड़ी द्वारा अमेरिका की दीवार तक ले जाकर प्रवेश करा दिया जाता है। इसी तरह यूरोप के देशों में ट्रेवल वीजा के जरिए भारतीयों को भेजा जाता हैं। अप्रवासीयों को अमेरिका एवं यूरोप के कुछ देशों में जिस लोकप्रिय मार्ग का प्रयोग किया जाता है उसे "Donkey flight" कहा जाता हैं। डेविड एम. हीर के अनुसार, "देशांन्तरण का अर्थ है अपने स्वभाविक निवास को परिवर्तित कर देना।"

देशान्तरण को प्रभावित करने वाले घटक

देशान्तरण विविध कारकों अथवा तत्वों से प्रभावित होता है। इसके लिए किसी विशिष्ट कारक को जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं होगा। देशान्तरण को प्रभावित करने वाले घटकों में कभी कोई प्रभावी होता है तो कभी कोई अन्य घटक तथा कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं कि देशान्तरण को प्रभावित करने वाले कई घटक एक साथ प्रभावी हो जाते हैं। देशान्तरण को प्रभावित करने वाले समस्त कारकों को जनांकिकीविदों द्वारा मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। प्रथम, आकर्षक कारक (Pull Factors) तथा द्वितीय, प्रत्याकर्षक कारक (Push Factors) । आकर्षक कारकों में से कुछ प्रमुख कारक हैं- रोजगार एवं व्यवसाय के श्रेष्ठ अवसर, अधिक आय अर्जित करने के अवसर, शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण तथा आवास की सुविधाएं, मनोरंजन के साधनों की उपलब्धता, स्वास्थ्यप्रद जलवायु, सगे-सम्बन्धियों एवं इष्ट मित्रों का आकर्षण और उन्नत नगरीय जीवन। प्रत्याकर्षक कारकों में रोजगार के अवसरों का अभाव, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास तथा प्रशिक्षण का अभाव, मनोरंजन की सुविधाओं का अभाव, आय प्राप्ति तथा उन्नति के अवसरों का अभाव, सामाजिक तिरस्कार तथा बहिष्कार, असामाजिक तत्वों का आतंक, राजनैतिक, जातीय तथा धार्मिक आधार पर भेदभाव आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान अंतर्रराष्ट्रीय अवैध देशांतरण

अवैधानिक (Illegal) स्थानान्तरण लैटिन अमेरिका तथा कैरिबियन देशों में अधिक देखा जाता है। 1973 के कठोर नियम बन जाने के कारण यूरोप में भी अवैधानिक जनसंख्या में वृद्धि हुई। यहाँ पर ऐसे आवेदन पत्र 1980 में 20 हजार से बढ़कर 1992 में 560 हजार हो गए। विकासशील देश भी इससे अछूते नहीं हैं शरणार्थियों की संख्या में भी गत दशकों में अप्रत्याशित वृद्धि दृष्टिगत होती है जो 1973 में 18 लाख, 1978 में 60 लाख, 1981 में 68 लाख तथा 1990 में लगभग 200 लाख (2 करोड़) हो गई। 1992 में पूर्ववर्ती यूगोस्लाविया में जातीय झगड़े से यूरोप देशों में तथा वोसनिया के 340 हजार लोगों ने जर्मनी में शरण पायी। इसके अतिरिक्त रूसी गणतन्त्र से 1990 में लगभग 50 लाख विस्थापित लोगों को अपने मूल जन्म-स्थलों पर आश्रय लेने के लिए विवश होना पड़ा। जिसके लिए आप्रवास एवं उत्प्रवास पर अप्रतिबन्ध, वित्तीय संकट, जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी तथा स्वास्थ्य सहायता का सूत्रपात, बाहरी देशों में बेहतर शैली और विदेशी राष्ट्रों में अकुशल श्रमिकों की माँग इत्यादि कारण उत्तरदायी समझे जाते हैं।

MPI (Migration Policy Institute) की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय मूल के 2.7 मिलियन प्रवासी अमेरिका में रह रहे है जिनमे 63927 बिना दस्तावेज के अमेरिकी सीमाओं पर पहुचे और शरण मांगी जो पिछले वर्ष के आकड़ो के मुकाबले दोगुने से भी अधिक थे| अमेरिका की मेक्सिको के साथ लगती दक्षिणी सीमा अवैध प्रवासियों का प्रमुख आगमन स्थल है। अक्टूबर 2021 से सितंबर 2022 तक अमेरिकी सीमा सुरक्षा एजेंसियों ने 18300 भारतीय प्रवासियों की अवैध घुसपैठ रोकी गई हैं।

अत उपरोक्त विमर्श के आधार पर हम कह सकते है कि भारत के लोगों का यूरोप व अमेरिका के देशों की तरफ अवैध देशांतरण बढ़ा है ।

साहित्य की समीक्षा

भारतीय और विदेशी विद्वानों द्वारा समय समय पर भारत में अन्य देशों और भारत से यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में अवैध प्रकृति के अंतर्राष्ट्रीय देशांतरण से संबंधित बहुत से अध्ययन किए गए हैं जिनके माध्यम से देशांतरण के तरीकों, कारणों , प्रभावों और समस्याओं को रेखांकित किया गया है । इस तरह के कुछ प्रमुख अध्ययन निम्न हैं:

रॉबिन्सन (1984) ने अपने शोध "Illegal immigrants in Canada: Recent developments" में पाया कि कनाडा जैसे देश में अप्रवास नीतियां और उनका प्रबंधन अन्य देशों के लिए लंबे समय से देशांतरण का एक कारक रहा है । इन्होंने कनाडा में अवैध निवासी आबादी की ऊपरी सीमा लगभग 50,000 होने का अनुमान लगाया गया था। भारत से आगंतुक वीजा छूट को हटा देने के बाद अक्टूबर 1981 में, जब भारतीय नागरिकों द्वारा शरणार्थी की स्थिति के लिए दावों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, तो कनाडा की शरणार्थी निर्धारण प्रणाली को ख़तरे में डालना शुरू कर दिया था।

उस समय वीजा की आवश्यकता को उस देश में बेईमान "परामर्शदाताओं" और ट्रैवल एजेंटों द्वारा शोषण के खिलाफ भारतीय नागरिकों को कुछ सुरक्षा प्रदान करने के रूप में देखा गया था।

ब्राट्सबर्ग (1995) ने आपने शोध "Legal versus Illegal U.S. Immigration and Source Country Characteristics" में इंगित किया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में कानूनी और अवैध दोनों प्रकार के अप्रवास पिछले दो दशकों में बढ़े हैं। जनसंख्या वृद्धि के अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि 1980 और 1986 के बीच अवैध आप्रवासन के कारण शुद्ध जनसंख्या वृद्धि 1,00,000 से 3,00,000 प्रति वर्ष के बीच थी। 1986 के आप्रवासन सुधार और नियंत्रण अधिनियम पारित होने के बाद भी ऐसा कोई संकेत नहीं है कि अवैध आप्रवासियों का वार्षिक प्रवाह कम हो गया है।

हेकमैन (2004) ने "Illegal migration: What can we know and what can we explain? The case of Germany" के अध्ययन में यह बताया कि 'मानव तस्करों' द्वारा अवैध प्रवासन को बढ़ावा दिया जाता है। शोधकर्ता ने यह भी बताया कि जर्मनी में अवैध प्रवासियों का एक बड़ा हिस्सा पंजीकृत हैं ।

एलस्पेच और जोआन (2005) "International Migration and Security: Opportunities and Challenges" ने अपने अध्ययन में विकसित दुनिया के लिए अवसरों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया है। इस अध्ययन में कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में यूरोप, अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में प्रवासियों की समस्याओं पर चर्चा की गई है और यह पाया कि इन देशों में प्रवासियों व्यक्तियों सांस्कृतिक एवं पहचान सुरक्षा, और व्यक्तिगत एवं आर्थिक सुरक्षा, कानूनी व्यवस्थाओं, मानवाधिकारों, आतंकवाद और राजनीति भागीदारी से संबंधित अनेक समस्याएं हैं अभी भी विद्यमान हैं ।

बेजबरूआ (2005) ने समझाया है कि बांग्लादेश से अवैध प्रवासन सबसे बड़ी समस्या है जिसका भारत ने सामना किया है। भारत में अवैध प्रवासियों की आवजाही विभाजन से पहले शुरू हो गई थी। 1947 में विभाजन के बाद। हिंदुओं ने मुख्य रूप से पूर्वी पाकिस्तान से असम, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में प्रवेश किया। 1971 में, भारत की मदद से, बांग्लादेश ने सांप्रदायिक शांति, सद्भाव और प्रवासन की दर में कमी की आशा के साथ पाकिस्तान से मुक्ति प्राप्त की। लेकिन इसके बाद भी बड़ी संख्या में प्रवासियों का भारत में आक्रमण जारी रहा। लेख में बांग्लादेशियों को पीछे धकेलने के सुझावों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है जैसे अवैध प्रवासियों का आर्थिक बहिष्कार, बहुउद्देश्यीय पहचान पत्र का उपयोग, बांग्लादेश के साथ जबरदस्ती कूटनीति और अधिक सीमा नियंत्रण आदि शामिल हैं।

एडवर्ड्स (2006) ने अपने शोध "Between a Rock & a Hard Place": North Africa as a Region of Emigration, Immigration & Transit Migration. में पाया कि जर्मनी में अवैध प्रवास एक बड़ी समस्या रही है । अवैध प्रवास की घटना के लिए उत्तरदायी ऐतिहासिक और संरचनात्मक कारकों में गहराई से खोज कर विस्तृत अनुभवजन्य मामलों पर ध्यान दिया गया है । उनके अनुसार अवैध प्रवास समस्या राष्ट्रीय क्षेत्रीय सीमाओं के पार होने वाली सभी गैर-वैध निजी आर्थिक गतिविधियाँ हैं । अवैध प्रवासी: अस्वीकृत शरण चाहने वाले होते है, और वे वीजा या परमिट की तकनीकी शर्तों का उल्लंघन करते हैं। एक ऐतिहासिक अवलोकन के अनुसार,अधिकांश आप्रवासी उन देशों से आते हैं जिनके पास सीमित पूंजी, कम रोजगार सृजन दर और श्रम के प्रचुर भंडार हैं । यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में रोजगार को पूर्व-मौजूदा अनौपचारिक क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ अवैध प्रवासी श्रम प्रवाह की वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में पहचाना जाता है। अवैध प्रवासी आर्थिक क्षेत्रों की पहचान अनौपचारिक रोजगार के रूप में करता है । विशेष रूप से निर्माण, इसके बाद कृषि, होटल और रेस्तरां, और व्यक्तिगत और घरेलू सेवाएं आदि क्षेत्र हैं जिनमें अवैध (साथ ही कानूनी) अप्रवासी पाए जाते हैं।

पोर्टर (2006) ने अपने शोध "illegal immigrants should not receive social service" में पाया कि अपने पूरे इतिहास में, संयुक्त राज्य अमेरिका अपार अवसरों का देश रहा है। कई लोगों के लिए, ऐसे देश में रहना एक सपना है, उसी सपने को पूरा करने के लिए कुछ लोग अवैध रूप से यू.एस. में प्रवेश करते हैं। आज अमेरिका में दस लाख से अधिक "अवैध" अप्रवासी हैं जो मुफ्त शिक्षा, रोजगार के अवसर और, सबसे महत्वपूर्ण, स्वास्थ्य सेवा का लाभ उठाते हैं। अमेरिकियों ने माफी की एक श्रृंखला को अपनाया है जो अवैध अप्रवासियों के लिए अमेरिका में स्थायी रूप से रहना संभव बनाता है। आज अवैध अप्रवासी न केवल अमेरिका में बुनियादी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि संघ द्वारा वित्त पोषित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में मैट्रिक पास करने के पर्याप्त अवसर भी प्राप्त कर रहे हैं। अधिकांश अवैध अप्रवासी कम वेतन पर अवांछित नौकरियों पर काम करते हैं, और उन क्षेत्रों में रहते हैं जहां बहुत से अमेरिकी निवास नहीं करते हैं। फेडरल रिजर्व ने एक रिपोर्ट के अनुसार 1996 और 2002 के बीच अमेरिकी अर्थव्यवस्था में 9.7 मिलियन नौकरियां जोड़ी गईं थी । उनमें से 5.6 मिलियन पद विदेशी मूल के श्रमिकों द्वारा भरे गए थे।

सहाय (2012) के अनुसार भारतवंशी लोग यू. के. में अन्य देशो के मुकाबले अधिक है, पंजाब से लगभग हर वर्ष लगभग 20,000 युवा अनियमित प्रवासन का प्रयास करते हैं जिनमे अधिकाश 21-30 साल की आयु के पुरुष है, और अनियमित प्रवासियों का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र से है | जिनकी कुल संख्या 2020 में अनुमानित 8,80,000 है| 2011 की जनगणना के अनुसार सबसे अधिक भारतीय मूल के निवासियों वाले शहर लन्दन(262,247), लिसेस्टर (37,224), बर्मिंघम(27,206) और वाल्वर हैस्पटन(14,955) है | भारतीय मूल के निवासियों के वहाँ जनसांखकीय और राजनैतिक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं ।

कपूरिया (2019) ने अपने शोध "International migration from Punjab and challenges for governance" में पाया कि पंजाब देश के उन कुछ राज्यों में से एक है जिसने ऐतिहासिक रूप से अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों के पूल में योगदान दिया है । कुछ अनुमानों के अनुसार विदेशों में लगभग 5 मिलियन पंजाबी हैं । कई विकसित देशों द्वारा चुनिंदा आव्रजन कानूनों, नीतियों और कड़े सीमा नियंत्रण के बावजूद, ग्रामीण पंजाब से अंतर्राष्ट्रीय अवैध प्रवास एक महत्वपूर्ण पैमाने पर जारी है, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास ब्रिटिश सेना में भर्ती के साथ शुरू हुआ, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य के कई अन्य उपनिवेशों में प्रवास के रास्ते खोल दिए, जहाँ पंजाबियों को कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया था। परिणामस्वरूप जल्द ही, स्वैच्छिक पलायन शुरू हो गया । आरंभ में प्रवासियों के गंतव्य सुदूर पूर्व, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा, यूएसए और अफ्रीका, विशेष रूप से

पूर्वी अफ्रीका में ब्रिटिश उपनिवेश थे। 1980 के दशक में, मिट्टी और जल कृषि के विकास पर नकारात्मक प्रभाव, खेती की बढ़ती लागत, बढ़ते कर्ज और किसानों और कृषि श्रमिकों द्वारा आत्महत्याओं जैसे अनेक कारणों ने बड़ी संख्या में युवाओं को विदेशों में अवसरों की तलाश करने के लिए धकेला हैं।

गारहा (2020) ने अपने शोध " Punjabi irregular Immigration to Italy and Spain : Cause and consequence" में पाया कि 1990 के बाद पंजाब के विभिन्न शहरों में एक अनियमित प्रवासन रूपी उद्योग तेजी से फल-फूल रहा है । यहाँ युवा पुरुषों में किसी भी कीमत पर प्रवास करने की उत्सुकता रखते हैं और यूरोप में सामाजिक नेटवर्क से समर्थन और अनौपचारिक नौकरियों की उपलब्धता के कारण पंजाब के अधिकांश अनियमित अप्रवासी स्पेन या इटली में जा रहे हैं। इस शोध में यह भी बताया कि पिछले दो दशकों से अनियमित आप्रवास यूरोपीय संघ (ईयू) के कई देशों में चिंता का कारण बन गया है, यूरोपीय संघ के देशों में अनियमित अप्रवासियों की सही संख्या अज्ञात है। अनियमित अप्रवासियों में अधिकांश को कानूनी रूप से दर्ज किया जाता है और बाद में उनके पर्यटक वीजा या अस्थायी निवास परमिट दे दिया जाता है । भौगोलिक स्थिति के कारण स्पेन और इटली, अनियमित अप्रवासियों के लिए मुख्य प्रवेश द्वार हैं । एक मजबूत अर्थव्यवस्था के बावजूद, इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में, भारत के अन्य सभी राज्यों की तुलना में पंजाब से नियमित प्रवासियों की संख्या सबसे अधिक थी। यह कुछ सवाल उठाता है, जैसे कि पिछले दो दशकों में, पंजाब में ऐसा क्या हुआ कि यहां के लोग (नियमित या अनियमित रूप से) प्रवास करने के लिए इतने उतावले हो गए हैं । 1980 के दशक में पंजाब में राजनीतिक अशांति और 1990 के दशक में भारतीय आर्थिक नीतियों में नवउदारवादी बदलाव के कारण पंजाब में सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों का पतन हुआ। यह स्थिति अनियमित अप्रवासियों के बीच तीव्र अवसाद का कारण थी जिसने लोगों को अनियमित उत्प्रवास के लिए बाधित किया ।

बाह (2022) ने अपने शोध "Impact of illegal migration : Lessons for migration management professionals" में पाया कि विशेष रूप से कम विकसित देशों से विकसित देशों में अवैध प्रवासन की तीव्र इच्छा के लिए संसाधनों की कमी, अंधकारमय भविष्य, बेहतर रहने की स्थिति और रोजगार के अवसरों की खोज, बढ़ती असमानता आदि जिम्मेदार हैं । सामाजिक-आर्थिक भेदभाव, मानवाधिकारों का उल्लंघन, गरीबी, पर्यावरणीय गिरावट, संघर्ष और हिंसा आदि के कारण दुर्भाग्य से यह संख्या बढ़ रही है । हाल के वर्षों में, पहले की तुलना में अधिक लोग प्रवासन कर हैं। इसमें न केवल स्रोत देशों की अधिकत्तर युवा आबादी शामिल है, बल्कि वे उन्नत देशों में जाने के लिए, अपने जीवन को जोखिम में डालकर मानव तस्करों पर निर्भर हैं । संयुक्त राज्य अमेरिका में अप्रवासी, निर्वासन के निरंतर भय में रहने के अलावा, स्वास्थ्य सेवा और कानूनी सेवाओं जैसी कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक सेवाओं से भी वंचित रहते है ।अवैध अप्रवास से मानव तस्करी, मादक पदार्थों की तस्करी, यौन शोषण, चोरी और वेश्यावृत्ति जैसे अपराधों में काफी वृद्धि हुई है ।

अत: उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत से यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में अवैध देशांतरण के लिए बहुत से कारक उत्तरदायी हैं । पंजाब राज्य से अधिक संख्या में अवैध प्रवासन होना पाया गया है और अब हरियाणा जैसे प्रांतों में भी इसका प्रचलन बढ़ रहा है और इसके बहुआयामी प्रभाव सामने निकल कर आ रहें हैं जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक व जनसांखिकीय परिवर्तन, आर्थिक विकास, दुर्व्यवहार और शोषण, मादक द्रव्यों के सेवन, आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि, संघर्ष और राजनीतिक तनाव, सुरक्षा खतरे, रोजगार के अवसर, भेदभाव, स्वास्थ्य जटिलताएं, पारिवारिक समस्याएं,जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक आपदाएँ आदि शामिल हैं ।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

हरियाणा में इस विषय से संबंधित बहुत ही कम अध्ययन हुए हैं, मेरा अध्ययन संभवत इस प्रकार का पहला अध्ययन है जिसके द्वारा वे व्यक्ति जिनके परिवारों से लोग अवैध रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में गए हैं उनके परिवारों में किस प्रकार के संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक परिवर्तन आयें हैं , का भी विश्लेषण किया गया है। इसके साथ - साथ अवैध उत्प्रवास के मूल कारणों को भी पता लगाया गया है। जिससे संस्थागत रूप से कुछ ठोस नीतियों का निर्माण हो सके। ऐसी अपेक्षा है कि इस अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष व सुझाव भी उभर कर सामने आएंगे जो इस समस्या का आधारभूत हल प्रदान कर सकने में सहायक होंगे ।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य:-

इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य होंगे -

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को जानना ।
2. उत्तरदाताओं में उत्प्रवास की प्रवृतियों को जानना
3. उत्तरदाताओं में उत्प्रवास से उपरांत हुए सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करना
4. उत्तरदाताओं में उत्प्रवास से उत्पन्न विभिन्न समस्यायों को जानना
5. हरियाणा में लोगों के विदेशों में अवैध उत्प्रवास को रोकने हेतु विद्यमान संस्थागत उपायों का विश्लेषण करना

प्रस्तावित शोध प्रश्न :-

प्रस्तावित शोध निम्न प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करेगा –

1. हरियाणा में अवैध रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में हो रहे यहाँ के लोगों के उत्प्रवास की प्रवृतियों किस प्रकार की हैं ?

2. हरियाणा के लोगों में अवैध रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में उत्प्रवास के उपरांत किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं ?
3. हरियाणा में लोगों के संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में अवैध उत्प्रवास से उत्पन्न कौन सी विभिन्न समस्यायेँ हैं ?
4. हरियाणा में लोगों के विदेशों में अवैध उत्प्रवास को रोकने हेतु कौन से संस्थागत उपाय विद्यमान हैं?

प्रस्तावित शोध-पद्धति :

वर्तमान शोध गुणात्मक व मात्रात्मक प्रकृति का होगा । इस शोध में वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया जायेगा । वर्णनात्मक शोध प्ररचना का उद्देश्य समस्या के बारे में पहले उपलब्ध तथ्यों व अवधारणाओं का विस्तार करना तथा विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना में किसी सामाजिक घटना के कारणों और प्रभावो की जांच की जाती है। इस अध्ययन में हरियाणा के चार जिले कैथल के पूडरी ब्लॉक को अध्ययन क्षेत्र मान कर सुविधाजनक निदर्शन (Convenient sampling) के माध्यम से ग्रामीण व शहरी दोनों प्रकार के उन परिवारों के व्यक्तियों को उत्तरदाताओं के रूप में चयन किया, जिनके घर से लोगों का संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में अवैध उत्प्रवास हुआ है। और अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया गया है। व इसके अतिरिक्त उत्प्रवासियों से भी सूचना प्रोद्यौगिकी के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई। और प्राथमिक डेटा के आधार पर इस अध्ययन से पता चलता है कि अवैध अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि, नौकरी की सुविधा न होना, कम वेतन, कम आय, सूखा, कम चिकित्सा एवं शैक्षणिक सुविधाएं शामिल हैं। क्योंकि उत्प्रवासीय एजेंटों से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में इन चार जिलों से सबसे ज्यादा लोगों का संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप में अवैध उत्प्रवास हुआ है।

उत्तरदाताओं की आयु संबंधित जानकारी

आयु (वर्षों में)	उत्तरदाता	प्रतिशत
18-25	220	44%
25-30	105	21%
30-35	90	18%
35-40	55	11%
40-45	30	06%
45-50	0	0%
कुल	500	100

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या 18-25 साल व 25-30 साल वाले युवाओं की हैं। और सबसे कम 40-45 वालों की हैं।

उत्तरदाताओं की लैंगिक जानकारी

लिंग	उत्तरदाता	प्रतिशत
पुरुष	470	94%
स्त्री	30	06%
	0	0%
कुल	500	100

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या पुरुषों की हैं। और सबसे कम संख्या स्त्रियों की हैं।

उत्तरदाताओं की शिक्षा से संबंधित जानकारी

शिक्षा	उत्तरदाता	प्रतिशत
दसवीं	20	04%
बारहवीं	290	58%
बी.ए.	150	30%
एम.ए.	40	08%
पीएच.डी.	0	0%
कुल	500	100

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या में बारहवीं पास हैं। और सबसे कम संख्या दसवीं पास की हैं।

उत्तरदाताओं की परिवार संबंधित जानकारी

परिवार	उत्तरदाता	प्रतिशत
सयुक्त परिवार	25	05%
एकल परिवार	475	95%
कुल	500	100

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या में एकल परिवारों से सम्बद्ध रखने वालों की हैं। और सबसे कम संख्या सयुक्त परिवारों सम्बद्ध रखने वालों के हैं।

उत्तरदाताओं की जाति से संबंधित जानकारी

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या में रोड़ जाति व जाटों की हैं। और सबसे कम संख्या गुज्जर व अन्य जातियों की हैं।

जाति	उत्तरदाता	प्रतिशत
रोड़	275	55%
जाट	175	35%
ब्राह्मण	25	5%
गुज्जर	15	3%
अन्य	10	2%
कुल	500	100

व्यवसाय	उत्तरदाता	प्रतिशत
सरकारी नौकरी	0	0%
प्राइवेट नौकरी	40	8%
खेती	445	89%
बिजनेस	10	2%
अन्य	5	1%
कुल	500	100

उत्तरदाताओं की विवाह से संबंधित जानकारी

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या अविवाहितों की हैं। और सबसे कम संख्या तलाकशुदा की हैं।

विवाहित स्थिति	उत्तरदाता	प्रतिशत
विवाहित	150	30%
अविवाहित	340	68%
तलाकशुदा	10	2%
कुल	500	100

उत्तरदाताओं की पारिवारिक व्यवसाय से संबंधित जानकारी

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या में कृषि व्यवसाय से सम्बध रखने वालों की हैं। और सबसे कम संख्या बिजनेस व अन्य की हैं।

उत्तरदाताओं की क्षेत्र से संबंधित जानकारी

क्षेत्र	उत्तरदाता	प्रतिशत
ग्रामीण	410	82%
शहरी	90	12%

कुल	500	100

अध्ययन में पाया गया कि अवैध तरीके से जाने उत्प्रवासियों की सबसे ज्यादा संख्या ग्रामीणों की हैं। और सबसे कम संख्या शहरी क्षेत्र की हैं।

उत्तरदाताओं के अवैध उत्प्रवास के कारण

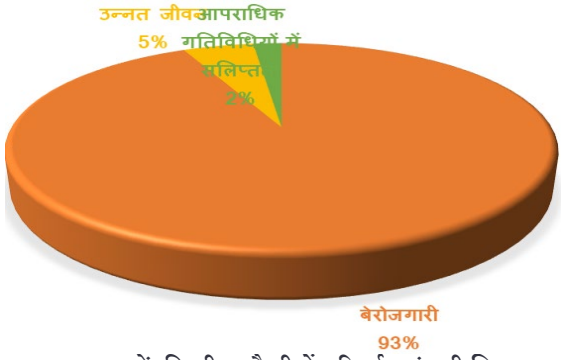

उत्तरदाताओं की जीवनशैली में परिवर्तन संबधी विचार

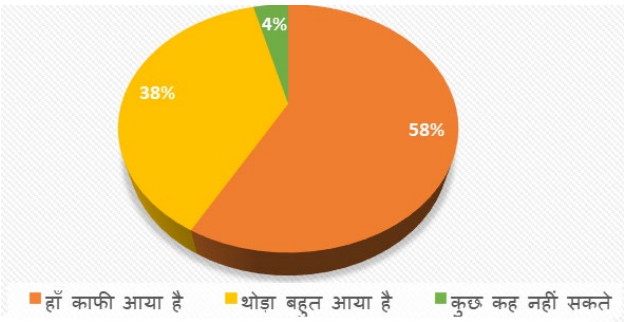

उत्तरदाताओं के उत्प्रवास के पश्चात स्थायी निवास संबंधित विचार

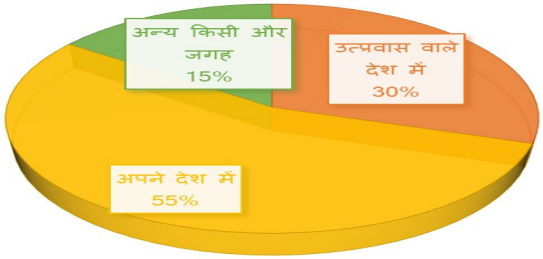

उत्प्रवास के उत्तरदाताओं की संतुष्टि का स्तर

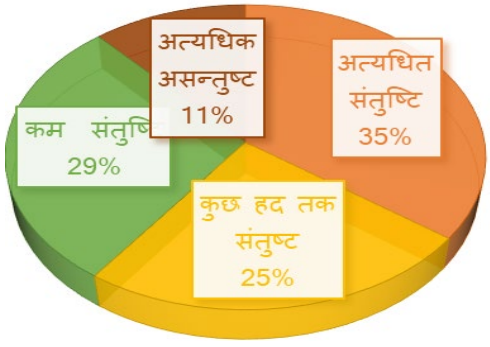

निष्कर्ष:- इस अध्ययन से पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे ज्यादा रोड़ बिरादरी के युवा विदेशों में पलायन कर रहे हैं इसके कुछ आकर्षक और प्रत्याकर्ष कारक जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के कारण रोजगार की सुविधाए, अच्छा वेतन और अधिक आय, चिकित्सा, नौकरी की सुविधा न होना, कम वेतन, कम आय, सूखा, कम चिकित्सा एवं शैक्षणिक सुविधाएं आदि हैं। अन्य कारक जैसे शैक्षणिक सुविधाएं भी ग्रामीण लोगों को शहरों एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की ओर जाने के लिए आकर्षित कर रही हैं। वे वहाँ विभिन्न प्रकार के छोटे मोठे कार्य करते

हैं और रुपये का विदेशी मुद्रा से काफी अंतर होने के कारण वे प्रतिमाह औसतन दो से 3-4 लाख तक पैसा भेजते हैं। प्रवासियों को कम करने के लिए सरकार और सरकारी संगठनों द्वारा तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे प्रवासी नए कौशल हासिल कर सके। हालाँकि आज लगभग सभी क्षेत्रों में प्रवासी श्रमिकों को रोजगार देने से प्रवासन में बढ़ावा आने की संभावना है। प्रवासी श्रमिकों को रोजगार दिलवाने के नाम पर ठेकेदारों और एजेंटों की एक जटिल प्रणाली के माध्यम से शोषण करने की एक भयानक स्थिति बनी हुई हैं जिसे रोका जाना चाहिए, जिससे श्रमिकों की स्थिति मे सुधार हो सके। श्रमिकों को अंतर्राष्ट्रीय नीतिगत तरीके से वैध दस्तावेजों के साथ प्रवेश करना चाहिए। भारत सरकार द्वारा ऐसे कदम उठाने की जरूरत है जिससे अंतर्राष्ट्रीय प्रवसियों को रोकने के लिये शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओ मे सुधार करने चाहिए। यदि सरकार ऐसी नीतियों को लागू नही करती है, और अवैध प्रवासियों के एजंटों पर कार्यवाही नहीं करती तो देश की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा शोषण का शिकार होगा। जिससे सतत विकास लक्ष्यों तक का सफर तय करना भारत के लिये सपना रह जाएगा।

ACKNOWLEDGEMENT
None.

CONFLICT OF INTEREST
None.

सदर्भ सूची

Bah, Y.M. (2022) International Journal of Arts, Humanities and Social studies ISSN:2582-3647, volume 4:issue 6;page no.146-152.

Baldwin-Edwards, M. (2006). "Between a Rock & a Hard Place": North Africa as a Region of Emigration, Immigration & Transit Migration. *Review of African Political Economy*, *33*(108), 311–324. http://www.jstor.org/stable/4007166

Bezboruah D.N 2005 "Demographic threats in Assam", Dialogue, Vol. 6, No. 3.

Bhawra, V. K. (2013). *Irregular Migration from India to the EU: Evidence from the Punjab*.

Bratsberg, B. (1995). Legal versus Illegal U. S. Immigration and Source Country Characteristics. *Southern Economic Journal*, *61*(3), 715–727. https://doi.org/10.2307/1060992

Garha, N. S. (2020). Punjabi irregular immigration to Italy and Spain: causes and consequences. *South Asian Diaspora*, *12*(2), 195-211.

Heckmann, F. (2004). Illegal Migration: What Can We Know and What Can We Explain? The Case of Germany. *The International Migration Review*, *38*(3), 1103–1125. http://www.jstor.org/stable/27645427

Kapuria, S. (2019). International migration from Punjab and challenges for governance. *Research Journal (Arts)*, 1-19.

Lee E. S. (1966). A theory of migration. Demography, 3 (1), 47-97. http:// doi.org/ 10.2307/2060063.

Merton R. K. (1949). Social theory and social structure, New York: Free press, Current contents.

Notestein, F. W. (1945). "Population-The long view. 'In *Food for the World, ed. Theodore W. Schultz. Chicago: University of Chicago Press.*

PORTER, L. (2006). ILLEGAL IMMIGRANTS SHOULD NOT RECEIVE SOCIAL SERVICES. *International Social Science Review*, *81*(1/2), 66–72. http://www.jstor.org/stable/41887261

Revenstein G. E. (1876) The Birthplaces of the people and the laws of migration. Trubner.

Robinson, W. G. (1984). Illegal Immigrants in Canada: Recent Developments. *The International Migration Review*, *18*(3), 474–485. https://doi.org/10.2307/2545881

Saha, K. C. (2009). *Smuggling of Migrants from India to Europe and in particular to the UK: A Study on Punjab & Haryana*. United Nations Office on Drugs and Crime, Regional Office for South Asia.

Sahai, Paramjit. (2012). Developing a Knowledge Base for Policy Making on India: EU Mirgation. India Centre for Migration, Europian University Institute

Smith, N. (2014). Donkey Flights": Illegal Immigration from Punjab to the United Kingdom. *Report published by Transatlantic Council on Migration and Migration Policy Institute (MPI). http://www. migrationpolicy. org/research/donkey-flights-illegal-immigration-punjabunited-kingdom*.

Thompson, W. S. (1929). *Danger spots in world population*. AA Knopf.

The Report of Migration Policy Institute, 2022. Available at https://www.migrationpolicy.org/article/indian-immigrants-united-states

Williamson, H. R. (2009). Illegal Immigration to Canada by sea : An Integrated Marine Security.

Elspeth G. and Joanne V. (2005). International Migration and Security: Opportunities and Challenges, Routledge, London.